Vol XI 2022

ISSN : 2250-2653

RESEARCH FRONTS

A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences, Arts & Commerce

Vol XI 2022

RESEARCH FRONTS

ISSN : 2250-2653

Research Fronts Vol. XI , 2022 ISSN 2250-2653
A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences , Arts and Commerce
Registered with
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Copyright – no part of the content(s) of the volume us allowed to be reproduce without the prior permission of the Govt. Digvijay Auto. P.G. College Rajnandgaon (C.G.)

Chief Editor
Dr. K. L. Tandekar, Principal & Patron
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh

Editorial Board

Dr. Shailendra Bharal, Prof. Commerce, Vikram University Ujjain
Dr. Vinod Sen, Ass. Prof. Economics, IGNTU, Amarkantak
Dr. Gaour Gopal Banik, Assot. Prof. Accountancy, Commerce college Guahati
Dr. Jitendra Ramteke, Prof. and Head, Department of Physics, S M Mohota College of Science, Nagpur (MS)
Dr. Anima Nanda, Dean, Bio and chemical engineering, Satyabhama, Institute of Science and Technology (Deemed to be university) Chennai 600119
Prof Manoj Kumar Sinha, Department of Geography, Patna university.
Dr. Pramod Kumar Mahish, Department of Biotechnology, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Dr. Keshaw Ram Adil, Department of Botany, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Prof. (Asst.) Ragini Parate, Asst. Professor of Commerce, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Board of Advisors

Prof. M. K. Verma, Vice Chancellor, Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University Durg, India.
Dr. S. K. Jadhav, Professor of Biotech. , Pt. Ravishankar Shukla University Raipur
Dr. P. R. Chandel, Principal Govt. PG College Chhindwada (M.P.)
Prof. Adhikesh Rai, Deal faculty of Commerce, Rani Durgawati University Indore
Dr. Ravindra Bramhe, Professor of Economics, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur, Chhattisgarh, India
Dr. R. P. Patel, Professor, Department of Physics, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur (C.G.)

Managing Editor
Prof. (Asst.) Raju Khunttey, rajugdcr@gmail.com

Published by
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Contents

S. No.	Title	Author(s)	Pages
1	Prof. Mohd. Firoz Khan: Scholarship and Simplicity is Thy Name	*Mumtaz Khan*	1 - 4
2	Assessment of Welfare Schemes for Educational Development A case study of the SC Population of Birbhum District, West Bengal	*Somnath Majhi and Sudhir Malakar*	5 - 17
3	Diversity of Rotifera in Kapileshwar lake, Ashti, Di-Wardha (M.S.)	*S.S. Nimgare and U.W. Fule*	18 - 24
4	कालिक बाजार केन्द्रों की स्थानिक–कालिक संगठन	*डुमन साहू और कृष्णनन्दन प्रसाद*	25 - 45
5	बी.एड. प्रषिक्षार्थियों के सृजनात्मक षिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन	*नीतू सिंह, डॉ. निषा श्रीवास्तव*	46 - 51
6	Eco-revolution through Minor forest-based products in the state of Chhattisgarh	*Madhu Yadav and D.P. Kurre*	52 - 67
7	वित्त आयोग की ग्राम पंचायत के विकास में भूमिका	*रागिनीए के. एल. टांडेकर*	68 - 73
8	*छत्तीसगढ़ी कविता में जनजागरण (लक्ष्मण मस्तुरिया के संदर्भ में)*	कैलाश कुमार, शंकरमुनि राय	74 - 82
9	Somatogenic Properties of Soil In Relation To Microwave Remote Sensing	*A. K. Shrivastava & S. K. Patel*	83 - 94
10	कांट, कृ.च.भट्टाचार्य तथा योग	*हरनाम सिंह अलरेजा*	95 - 98

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन

नीतू सिंह, निशा श्रीवास्तव

Affiliation:
घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग

Corresponding Author:
निशा श्रीवास्तव
gsakm1978@yahoo.com

Abstract:

प्रस्तुत शोधपत्र में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन किया गया। शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों कला एवं विज्ञान विषय के महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें कि सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति मापन के लिए आर.पी. शुक्ला राज द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में दुर्ग क्षेत्र के शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। जिसके लिए कला व विज्ञान संकाय के 160 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है, चयनित प्रशिक्षणार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा उसके आधार पर परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए ली मूल्य ज्ञात किया गया। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि कला एवं विज्ञान के बी.एड. प्रशिक्षाणार्थियों शिक्षण के प्रति जागरूक है एवं उनके सृजनात्मक शिक्षण का विकास होता है।

Keywords:
बी.एड.
सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति
शिक्षा महाविद्यालय
बी.एड. प्रशिक्षाणार्थि

प्रस्तावना –

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी अंतर्निहित व्यक्तित्व का समुचित विकास करता हैं। ज्ञान, अनुभव, समायोजन द्वारा वह अपने व्यवहार को अधिक समाजोपयोगी, शुद्ध और कल्याणकारी बनाता है।

शिक्षा किसी भी देश की समृद्धि की जड़ है। जिस पर उस देश का विकास चारों दिशा में आगे बढ़ता है। शिक्षा मनुष्य को उसकी मनुष्यता से अवगत करके अन्य प्राणियों से उनकी अलग पहचान बनाती है। शिक्षा

का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है प्राचीन काल से शिक्षा प्राप्त करने तथा शिक्षा प्रदान करने का कार्य चला आ रहा है। शिक्षा जीवन का पर्याय है। अतएव शिक्षा से जीवन संबंधी आवश्यकताओं एवं उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता की अपेक्षा करना स्वाभाविक है। शिक्षा के माध्यम से नये विचारों का जन्म होता है। विचार क्रिया के रूप में परिवर्तित होते है और इस प्रकार दिन–प्रतिदिन एक अच्छे समाज का निर्माण होता है। शिक्षा के अभाव में समाज की प्रगति असंभव है। शिक्षा ही मानव समाज की विकास एवं प्रगति की आधारशिला है।

आधुनिक युग में शिक्षा की मान्यतायें बदल गई है। शिक्षा का केन्द्र बालक हो गया है। आज का उद्देश्य बालक के वर्तमान का विकास करना है बालक की रूचि, अभिरूचि के अनुसार शिक्षा पर बल दिया जाने लगा है। अध्ययन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान रखना आवश्यक हो गया है। जिस प्रकार कुशल डॉक्टर बनने के लिए औषधि यंत्र आदि के साथ रोगी के स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करना भी आवश्यक है उसी प्रकार कुशल अध्यापक बनने के लिए ज्ञान देने के साथ–साथ बालक के स्वभाव तथा उसके मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।

"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति है।"

– महात्मा गाँधी

सृजनात्मकता –

सृजनात्मकता का अर्थ वैज्ञानिक या कलात्मक सर्जन से ही नही है सृजनात्मक किसी भी व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज में कार्य करने जाते प्रत्येक के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता के दर्शन होते है।

प्राचीन जीवन शैली परिवर्तित हो गई है। हल की जगह ट्रेक्टर आ गया है, और बैलगाड़ी की जगह कार। मानव जीवन में अनेक परिवर्तन आ रहे है। सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के क्रियेटीविटी से बना है। इस शब्द के समानांत्तर विधायकता, उत्पादन, रचनात्मकता डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है।

"ज्ञान की अपेक्षा कल्पना अधिक महत्वपूर्ण है।"

– डॉ. अल्बर्ट आइन्सटीन

"सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।" **– क्रो एवं क्रो**

सृजनात्मकता शिक्षण –

सृजनात्मक शिक्षण में छात्रों को समस्याओं के समाधान की हल करने के अवसर दिये जाते है। छात्रों से यह आशा नही करनी चाहिए कि वे नवीन अविष्कार करेंगे या सृजनात्मक ज्ञान देंगे। शिक्षण का उद्देश्य खोज या नवीन छात्रों के समस्याओं एवं धारणाओं को भली–भाँति समझने लगते है, वे पुस्तकीय ज्ञान का पूरा–पूरा लाभ उठाते है। सृजनात्मक शिक्षण के लिए प्रायः इन अधिगमनों को प्रयोग किया जाता है।

सृजनात्मक की शिक्षण द्वारा विकास –

शिक्षण द्वारा कक्षा–कक्ष में बालकों की सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षण कार्य में शिक्षक की पाठ्यक्रम के अतिरिक्त शिक्षणेत्तर क्रियाओं को भी महत्व देना चाहिए। शिक्षक को कक्षा में गोष्ठियों, वाद–विवाद प्रतियोगिता निबन्ध प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, सेमिनार नवीन विषयों पर गोष्ठियाँ, भाषण, पोस्टर प्रतियोगिता का कार्यक्रम कराते रहना चाहिए।

अध्ययन की आवश्यकता –

कला शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक में संबंधित कुशलताओं का विकास करने के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रमों में परिवर्तन लाने के लिए सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के अध्ययन की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान विषय के बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान विषय के बी.एड. पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति क्या परिकल्पना के परीक्षण हेतु आंकड़ें एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन की परिसीमा –

अतः प्रस्तुत शोध रूपरेखा में छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के बी.एड. महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया जाएगा।

न्यादर्श –

दुर्ग क्षेत्र के शिक्षा महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कला व विज्ञान संकाय के 160 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है।

सांख्यिकीय विश्लेशण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषण मध्यमान एवं विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेशण –

प्रस्तुत शोध की समस्या दुर्ग जिले के बी.एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। इस अध्ययन में प्रशिक्षणार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर संबंधित प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} –

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया पाएगा। उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 4.1

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विवरण

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
विज्ञान विषय के प्रशिक्षाथी	80	106.76	4.63	1.57

कला विषय के प्रशिक्षार्थी	80	105.3	6.5	
Df = 158 P>0.05 सार्थक अंतर नहीं पाया गया।				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02} – कला विषय के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 4.2

कला विशय के महिला एवं पुरूश बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विवरण

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
कला विषय के महिला प्रशिक्षार्थी	40	104.15	7.63	1.60
कला विषय के पुरूष प्रशिक्षार्थी	40	106.45	4.932	
Df = 78 P>0.05 सार्थक अंतर नहीं पाया गया।				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि कला विषय के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{03} –

विज्ञान विषय के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 4.3

कला विशय के महिला एवं पुरूश बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विवरण

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
विज्ञान विषय के महिला प्रशिक्षार्थी	40	106.8	3.69	0.168
विज्ञान विषय के पुरूष प्रशिक्षार्थी	40	106.975	5.447	
Df = 78 P>0.05 सार्थक अंतर नहीं पाया गया।				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान विषय के महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

विवेचना –

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसका कारण यह हो सकता है कि कला एवं विज्ञान के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण के प्रति जागरूक है एवं उनमें सृजनात्मक शिक्षण का विकास होता है।

अनुकरणीय अध्ययन –

शोधकर्त्ता द्वारा चयन की गई समस्या के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में अध्ययन किये जा सकते है–

- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के मध्य सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मध्य सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।
- शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।
- महाविद्यालयों में पढ़ाने वाले अनुभवी एवं अनुभवहीन प्राध्यापकों के मध्य सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।
- कामकाजी महिलाओं के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन।

सुझाव –

इस प्रकार के अध्ययन में और अधिक समय दिये जाने पर गहन अध्ययन व एक बड़े क्षेत्र का अध्ययन किया जा सकता है। इस शोध प्रबंध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न सुझाव दिए जा सकते है –

- बी.एड. महाविद्यालय में सृजनात्मक शिक्षण को बढ़ाने के लिये योग्य एवं अनुभवी शिक्षक की नियुक्ति की जानी चाहिए।
- बी.एड. महाविद्यालय में विद्यार्थियों को सृजनात्मक शिक्षण के लिये पृथक कक्षा की सुविधा दी जानी चाहिए।
- बी.एड. महाविद्यालय में शिक्षण कें लिए सहायक सामग्री कक्ष बनाया जाना चाहिए।
- बी.एड. महाविद्यालय में शिक्षण के लिए उचित सहायक सामग्री की व्यवस्था होनी चाहिए।
- बी.एड. महाविद्यालय में सहायक सामग्री की व्यवस्था पर्याप्त होनी चाहिए।
- प्रत्येक वर्ष में बच्चों के लिए सहायक सामग्री सिखाने का कार्यक्रम रखा जाना चाहिए।
- महाविद्यालयों में शिक्षण के लिए शिक्षकों को जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।
- महाविद्यालयों को शिक्षण से संबंधित संगोष्ठी, समाचार, सम्मेलन का आयोजन किया जाना चाहिए।
- महाविद्यालयों को शिक्षण से संबंधित अंतरशालायें प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. Culpan, A, & Hoffert, B. (2009), Creativity Across The Knowledge *Continuum, Journal of Artistic And Creative Education (Jace), Volume 3, Number, 3 P-8*
2. Dagar, B. S. (2009), *Teaching and* Psychology *Psychology. Agra Learning Agrawal Publication, 5-6.*
3. Garvis, S. (2009), Improving The Teaching of the Arts, Pre-service Teacher Self Efficacy Towards Arts Education, *Us-China Education Review,* ISSN 1548-6613, Volume 6, No. 12 (serial No. 61), Australia USA, P-23-28.
4. Goyal, R., (2010), *Social Foundation of Education. Prenna Prakashan*, 156-157.

5. Kishor, A. *Art Education Experience*, Agra: Agrawal Publication, 29-35.
6. Klopper, C (2009), A Non-Linear Approach To Teaching and Learning in the key learning Area Creative Arts*, Journal of Arts, Journal of Artistic And Creative Education (Jace),* Volume 3, Number 1,P-30.
7. Kumar, V. (2004), *World Perspective on Teacher Education*. Sanjay Prakashan, 1-5.
8. Lal, B.V. & Tripathi, N. (2006). *Shiksha Me Navachar. Agra Vinod Pustak Mandir, 2-5. M,V. (2004). Education Technology*. Neelkamal Publication, 19-22.
9. Mangal, D. M. (2015), Examining Practice in Secondary Visual Arts Education, International Journal of Education & The Arts Volume 16 Number 17, Australia P-16.
10. Mohanty, J. (2003), *Modern Trends in Educational Technology* Neelkamal Publication, 36-37.
11. Pandy, K.P., & Bhardwaj, A.P. (2010) Action Research Agra Agrawal Publication, 153-157. Sha, G.P. (2001). *Prasar Shiksha.* Agra Vinod Pustak Mandir, 45-47.
12. Pathak, P.D. (2006), *Safal Shikshan Kala Vinod Pustak Mandir*, Agra, P-3-5.
13. Santrock, J.W. (2006), *Educational Psychology*, London, McGraw-Hill Companies.
14. Sharma, P. *Home Science Teaching*. Agra Vinod Pustak Mandir, 12-15, 47-88.
15. Sharma, R.K., & Dube, K. (2007). *Teacher Education.* Agra: Radha Prakashan Mandir, 78-86.
16. Sharma, S., & Gupta, N. (2009), *Educational Technology And Class Room Management.* Jaipur Shyam Prakashan, 72-88.
17. Sharma, R."Art Education", *Agra Radha Prakashan*, P:04.
18. Sharma, V, & Verma, M.(1983), *Household Art And Household Management*, International Publishing House, PP:35-37.
19. Takei, H. (2011), Teaching Effectiveness And Educational Components in Business Education for Liberal Arts Students, *International Journal of Education*, ISSN 1948-5476, Vol. 3, No. 1 :E8, Central Washington University, P-1-11.
20. Wood, S.E. and Wood, E.R.G. (1996), the world of Psychology, Allyn & Baccn Incorporated.

*****